HISTORY

B.A.(Hon's) PART-I

Paper-I (Ancient Indian History)

Unit-II (Iranian Invasion)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 38

"भारत पर ईरानी आक्रमण"

(Iranian Invasion)

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

ईरानी आक्रमण के समय उत्तर पश्चिमी भारत की राजनीतिक अवस्था:–

मगध के नेतृत्व में जिस समय पूर्वी भारत में एकीकरण का प्रयास चल रहा था, ठीक उसी समय पश्चिमोत्तर भारत में विकेंद्रीकरण की भावना भी विकसित हो रही थी। एक ही युग में एक ओर केंद्रीकरण का प्रयास चल रहा था और छोटे–छोटे राज्य लुप्त हो रहे थे। जबकि दूसरी ओर छोटे–छोटे राज पश्चिमोत्तर भारत में अपनी स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने के लिए आतुर हो रहे थे। मगध साम्राज्य का विस्तार अभी तक व्यास नदी के पूर्वी तट तक सीमित था। उस समय पंजाब और उत्तर पश्चिमी सीमा प्रांत में विभिन्न छोटे–छोटे राज्य थे। इन राज्यों में पारस्परिक संघर्ष और कलह का वातावरण बराबर विद्यमान रहता था। विदेशी आक्रमणकारियों के लिए इससे अच्छा अवसर और हो ही नहीं सकता? छोटे–छोटे राज्य होने के बावजूद वे सभी स्वतंत्रता–प्रेमी थे और अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए उन्होंने बड़े–बड़े बलिदान भी किए। पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत उस समय राजनीतिक वीश्रृंखलाता का अद्भुत रंग स्थल था। न तो उन राज्यों में से किसी के पास इतनी शक्ति थी कि सार्वभौम बनने का साहस कर सके न उनके सामने कोई वैसा राजनीतिक आदर्श ही था, जिससे उद्वेलित होकर वे राजनीतिक एकता की ओर बढ़ते। गंधार और कम्बोज जैसे पुराने राज्य अब शक्तिहीन हो चुके थे। जिस समय पश्चिमोत्तर मैं ऐसी हालत थी।उस समय ईरान में हखमी (Achaemenian) राजवंश अपने साम्राज्य–विस्तार में संलग्न था।

ईरानी आक्रमणकारियों का इतिहास

1. कुरुष (Cyrus):–

ई. पू 558–30 में हखमीराजवंश का कुरुष (Cyrus) ईरान का शासक था। उसके समय हखमी साम्राज्य का विस्तार पश्चिम में भूमध्य सागर तक और पूरब में बह्लीक और गांधार तक था। बह्लीक और गंधार पर साइरस ने ही अधिकार प्राप्त किया था; परंतु भारतीय सीमा के अंदर उसका प्रवेश संभव नहीं हो सका। स्ट्रबो के अनुसार साइरस ने एक सेना जेड्रोसिया

के रास्ते भारत विजय के लिए भेजी थी किंतु मार्ग की कठिनाइयों के कारण वह नष्ट हो गयी। भारत पर अपना अधिकार कायम करने में वह असफल रहा। उसके उत्तराधिकारी काम्बोज प्रथम(530–522 ई पू), कुरुष द्वितीय और काम्बुजी द्वितीय पश्चिम में इतने उलझे रहे कि भारत पर आक्रमण करने का मौका ही उन्हें नहीं मिला।

2. दरायवौष प्रथम (Darius–I):–

522 ईसा पूर्व में हखमनी साम्राज्य के सिंहासन पर डेरियस प्रथम बैठा। उसने 522 ई पू से 486 ई पू तक शासन किया। डेरियस प्रथम हखमी वंश का एक महाप्रतापी राजा था। 'परसि–पोलिस' और 'नक्श–ए–रुस्तम' अभिलेखों से उसके समय की बहुत–सी बातों पर प्रकाश पड़ता है। बेहिस्तून–अभिलेख, जिसमें फारसी प्रजाओं के परीगणन में हिंदुओं का नाम भी है, ईरानी साम्राज्य को तेईस भागों में विभक्त किया गया है। और उसमें गंधार भी सम्मिलित है। इन तेईस प्रांतों को दरायवौष ने कुरुष से प्राप्त किया था। दरायवौष ने सिंधु नदी के तटवर्ती भूमि का एक भाग जीत लिया। उपर्युक्त 'परसिपोलिस' और 'नक्स–ए–रुस्तम" के अभिलेखों में हिंदू अथवा सिंधु तट के निवासियों को ईरान (फारस) की प्रजा कहा गया है। इस बात का प्रमाण नहीं है कि साइरस ने अपने जीवन में कभी सिंधु नदी को पार किया। डेरियस प्रथम ने ही सर्वप्रथम भारत के उन प्रांतों को जीतकर फारसी साम्राज्य में मिलाया। हेरोडोटस से हमें यह ज्ञात होता है कि डेरियस प्रथम ने 517 ईपू में कार्यंदा के स्काईलैक्स को सिंधु के मार्ग से फारस तक समुद्री जलमार्ग खोजने को भेजा था। स्काईलैक्स सिंधु नदी से समुद्र और वहां से फारस पहुंचा। यात्रा के क्रम में उसने वह सारी जानकारी प्राप्त कर ली जिसके लिए उसे भेजा गया था। हेरोडोटस इस विजित भारतीय भाग को फारसी साम्राज्य का बीसवां प्रांत कहता है। यहां से फारस सम्राट को स्वर्ण चूर्ण के रूप में प्रतिवर्ष प्रायः 10 लाख पौंड से अधिक की आय होती थी।

3. जर्गजीज (Xerxes 486 ई० पू. से 465 ई०पू०):–

डेरियस प्रथम के बाद जर्गजीज (Xerxes 486 ई० पू. से 465 ई०पू०) तक ईरान का शासक हुआ। इस समय फारस और यूनान के बीच संघर्ष चल रहा था और उसमें फारस की ओर से गाधार लोग और कुछ दूसरे भारतीय सैनिक भी लड़ने गए थे। द्वितीय परसिपोलिस–अभिलेख से भी यह सिद्ध होता है कि जर्गजिज के समय तक भारत का वह हिस्सा ईरानी साम्राज्य के अंतर्गत था। उसके समय ही भारत के उन हिस्से में ईरानीयों ने भारतीयों को 'देवम्' के स्थान पर 'ऋतम् की पूजा के लिए बाध्य किया था। उसके बाद कुछ दिनों तक भारत के उस भाग पर ईरानियों का अधिकार बना रहा।

अजिजीज (Artaxerxesna से ज्ञात होता है कि भारत से ईरानी सम्राट को कर मिलते थे। हेरोडोटस इसी का समकालीन था। डेरियस द्वितीय (Darius II–ई० पू० 330) कोदोमनस की सेना में, जो सिकन्दर के खिलाफ लड़ रही भारतीय सैनिक थे। धीर–धरि फारसियों का आधिपत्य घटने लगा और ई० पू. 327 के पूर्व ही निश्चित रूप से इनकी शक्ति इस क्षेत्र में क्षीण हो गई थी।

ईरानी आक्रमण का परिणाम:–

राजनीतिक दृष्टिकोण से भारत पर इसका कोई स्थायी प्रभाव नहीं पड़ा, यह स्पष्ट ही है। कारण, कुछ ही दिनों के बाद फिर इन्हीं क्षेत्रों पर यूनानियों का आक्रमण हुआ।

यह सच है कि राजनीतिक संपर्क से दोनों देशों को लाभ हुआ। व्यापार की प्रगति हुई और सांस्कृतिक आदान–प्रदान भी हुए। भारत के विदेशी व्यापार को इससे बहुत प्रोत्साहन मिला। इस समय के बहुत से व्यापारियों ने समुद्र के मार्ग से पश्चिमी देशों में आना–जाना शुरू किया और भारतीय सामान मिस्र और यूनान तक पहुँचने लगा। संगठित फारसी साम्राज्य को

Dr Guddy kumari (A.N.D College)

देखकर भारत में भी उसी प्रकार के साम्राज्य की स्थापना की महत्त्वाकांक्षा जागी। साम्राज्य प्रशासन के क्षेत्र में प्रांतीय शासन का सूत्रपात हुआ और इन प्रान्तों को Satrapy (क्षत्रपी) कहा गया है और शासन करनेवाले को 'Satrap (क्षत्रप) कहा गया है। उस क्षेत्र में क्षत्रप शब्द काफी प्रचलित हुआ। फारस के संपर्क से भारत में अर्माइक (Armaic) लिपि का विकास हुआ और इसी के बाद में खरोष्ठी निकली। यह लिपि दाहिनी से बाई ओर लिखी जाती थी। मौर्य साम्राज्य की आचार–व्यवस्था और कला पर भी फारस के प्रभाव देखे जा सकते हैं, विशेषकर अशोक के स्तंभों के शीर्षों की घंटा जैसी आकृतियों पर।

यह कहना कोई अभ्युक्ति नहीं होगी कि यूनानियों को इन्हीं लोगों से भारत–विजय की प्रेरणा मिली। स्काईलैक्स की खोज ने भविष्य के आक्रमणों की पृष्ठभूमि तैयार कर दी। भारत स्वर्ण और सेना दोनों के लिंए प्रख्यात था और महत्त्वाकाक्षियों के लिए ये दोनों ही वस्तुएँ वांछनीय थीं। मौर्य शासकों ने ईरानी भव्यता का अनुकरण किया। केश–सिंचन और कई प्रथाओं पर ईरानी प्रभाव बताए जाते हैं। इन तथ्यों के बावजूद इस आक्रमण का कोई स्थायी प्रभाव हम भारतीय इतिहास पर नहीं देखते हैं।

इस आक्रमण को एक घटना मात्र (episode) कहा गया है। कुछ पारसियों को हम मौर्य–सेना में भी पाते है। वे ऐसे लोग थे जो यहाँ रह गए थे और अपने जीवनयापन के लिए यहीं नौकरी करने लगे थे। इसका तात्कालिक प्रभाव कुछ अंशों में लिपि (यवन लिपि), सिक्कों और कलाओं पर भले ही पड़ा हो; परंतु स्थायी रूप से हम भारत पर इसका कोई प्रभाव नहीं देखते हैं। भारतवर्ष की कपास और सूती कपड़े का परिचय यूनानियों को इसी युग में मिला।

इस प्रकार ईरानी आक्रमण के भारत पर दूरगामी प्रभाव भी हुए। ईरानी आक्रमण का एक अन्य महत्वपूर्ण प्रभाव भी हुआ। जिसका उल्लेख करना आवश्यक है। इरानी संपर्क में आने के कारण भारतीय सैनिकों ने भारत ईरान की ओर से अनेक युद्धों में भाग लिया था उनके द्वारा प्रदर्शित अदम्य साहस व युद्ध कुशलता ने उन्हें विश्व प्रसिद्ध कर दिया। विशेष रूप से थर्मोपोली के युद्ध के पश्चात युद्ध के लिए भारतीय सैनिकों की मांग बहुत बढ़ गई थी।

धन्यवाद

Dr Guddy kumar (A.N.D College)